एक नास्तिक

का रूपान्तरण

एक नास्तिक

का रूपान्तरण

सत्य की ओर एक जीवन यात्रा

नैनान मथुल्लाह

उस सत्य को समर्पित

Ek Nasthik ka Roopantharan (Hindi)

by Ninan Mathullah

Copyright © 2015 by Ninan Mathullah

First Hindi Edition 2015

ISBN : 978-0984304547

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means—electronic, mechanical, digital, photocopy, recording, or any other—without prior permission of the publisher.

Published by
BV Publishing, Stafford
Texas 77477
www.bvpublishing.org

Printed and bound in India by
GS Media, Secunderabad - 500 067
printing@ombooks.org

विषय-वस्तु

प्रस्तावना	09
आभार प्रदर्शन	11
आमुख	13
अध्याय 1: प्रबुद्ध, ज्ञानी और चतुर	15
अध्याय 2: कहीं भी और हर कहीं	21
अध्याय 3: मन्ना अब भी गिर रहा है	27
अध्याय 4: ईश्वरीय वार्तालाप	33
अध्याय 5: आपका नाम पवित्र माना जाए	45
अध्याय 6: धन्य यादें	53
अध्याय 7: कर्म और परिणाम	57
अध्याय 8: विज्ञान या जादूगरी	61
अध्याय 9: अदृश्य हाथ	67
अध्याय 10: बूमरैंग	73
अध्याय 11: आत्मिकता का नकाब	79
अध्याय 12: लखपति से अधिक कौन बनना चाहता है?	87

अध्याय 13: भविष्यद्वक्ता और लेखक का रूपान्तरण 95
अध्याय 14: भविष्यद्वक्ता, राजा, और याजक 99
अध्याय 15: पायदान के पत्थर 109
अध्याय 16: बुद्धि का आरम्भ 129
अध्याय 17: मार्ग, सत्य और जीवन 145
अध्याय 18: जीवन का मार्ग 157
अध्याय 19: कर्म योगी 167
अध्याय 20: रूपान्तरण 175

शब्दकोष 181
Bibliography 191

प्रस्तावना

ऐतिहासिक दृष्टि से, भविष्यद्वक्ता और लेखक तलवार से अधिक बलवान साबित हुए हैं, उन्होंने अपने विचारों से राष्ट्रों और द्वीपखण्डों को जीत लिया है। विभिन्न धर्मों के भविष्यद्वक्ताओं ने उन धर्मों के लिए जिनका परिचय उन्होंने कराया, राष्ट्रों को जीत लिया, और उनके माध्यम से उन्होंने सत्य की डोर को उजागर किया। इस सत्य का संपूर्ण ज्ञान समय के पूरे होते संसार में आया।

परमेश्वर के दूतों की ये शिक्षाएं एवं उनके द्वारा प्रगट ज्ञान एक विशिष्ट ईश्वरीय विषय पर केन्द्रित हैं। यद्यपि विभिन्न समयों में विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पवित्र वचन दिए गए जिन्होंने विभिन्न संस्कृतियों को सम्बोधित किया, एक विवेकी मन इस सामान्य ईश्वरीय विषय को और उसके पीछे जो अदृश्य हाथ है, उसे खोज सकता है।

'एक नास्तिक का रूपान्तरण' केन्द्रिय इस पुस्तक का केन्द्रिय विषय ज्ञान है। ज्ञान या बुद्धि भविष्य को देखने की योग्यता है – इस जीवन को और इस जीवन के परे या अनंतकाल में देखने की योग्यता, और जीवन विषयक सत्य को, जिसमें उसे अधिक सफलता हासिल नहीं हुई है। इसके बावजूद, हम में से हर एक खुद के साथ विवाद करके, नये ज्ञान और जीवन अनुभवों के प्रकाश में आज इस अवस्था में आ पहुंचे है।

सांसारिक दार्शनिक और गुरूओं ने अधिकतर उन प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने का प्रयास किया है जिनका हम दैनिक जीवन में सामना करते हैं, उसी तरह जीवन विषयक सत्य, परंतु उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली। इसके बावजूद, हम में से हर एक आज नये ज्ञान और जीवन के अनुभवों के प्रकाश में अपने आपसे विवाद करके इस स्थिति में पहुंचा है।

जीवन के अनुभव प्रशिक्षण शाला हो सकती है जो व्यक्ति को इस सत्य की ओर ले जा सकती है। यदि इस पुस्तक पाठक को सत्य की ओर एक कदम आगे बढ़ाती है, तो लेखक को इस प्रयास से संतोष प्राप्त होगा।

हयूस्टन — नैनान मथुल्लाह

जून, 2014

आभार प्रदर्शन

मेरे कई मित्रों और परिवार ने इस पुस्तक के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है। मेरे पुत्र जेरो मथुल्लाह, मित्र हैदर एरेडोन्डो, Sheelu Raj और रेव्ह. विजु थॉमस ने इस पांडुलिपी का प्रूफ शोधन किया। Authorcoaching.com के किथ कैरल ने संगठन और प्रस्तुति में अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान किए, जॉन वर्गिस ने रेखाचित्र बनाने में और साजी क्लैरिऑन ने पृष्ठ सज्जा में सहायता की। इन सभी मित्रों को मेरा विशेष धन्यवाद। कैरिलीन मेडिसन ने इस प्रति का सम्पादन किया और ओ.एम. बुक्स से के.सी जोज़फ, सिस्टर दीना बेन्जामिन और डेनियल ने, तथा आर. जे. कम्युनिकेशन्स के मित्रों ने इसकी छपाई में अपना योगदान दिया। मैं डॉ. मैथ्यू वैरामन को विशेष धन्यवाद देता हूं, वे पेशे से वकील हैं और उन्होंने ईश्वरीय-विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की है, वे एक मासिक पत्रिका के सम्पादक हैं। उन्होंने इस पुस्तक में अपना आमुख लिखकर योगदान दिया। मेरे सभी मित्रों और परिवार को उनके प्रोत्साहन और सहायता के लिए धन्यवाद और ह्यूस्टन में रहने वाले वालसम्मा साम को भी हार्दिक धन्यवाद।

आमुख

नैनान मथुल्लाह द्वारा लिखित *एक नास्तिक का रूपान्तरणः सत्य की ओर एक जीवन यात्रा* यह पुस्तक उनकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि से लिए गए तर्क और विवाद पर आधारित है, इसमें उनके अनोखे व्यक्तिगत् अनुभव, कहानियां और उदाहरण भी सम्मिलित किए गए हैं। इस बहुमूल्य पुस्तक के लिए आमुख लिखते समय मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

यह पुस्तक शिक्षित समाज के तर्क वितर्क के तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक तरीकों को प्रस्तुत करती है। जैसा कि लेखक ने प्रस्तावना में कहा, इस पुस्तक का विषय 'ज्ञान' है।

लेखक ने विज्ञान विषय में स्नातक की दोहरी पदवी और उच्च स्नातक पदवी पाई है, तथा उन्हें इतिहास और धर्म की गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त है। इस पुस्तक में लेखक ने विभिन्न विषयों का अपना गहरा ज्ञान सजीव ढंग से प्रव्यक्त किया है। 'रूपान्तरण' या संपूर्ण परिवर्तन यह शब्द दर्शाता है कि यह एक जैविक परिदृश्य है जिसके द्वारा प्राणी भौतिक रूप से प्रौढ़ अवस्था में पहुंचता है। लेखक ने इस उपमा का उपयोग अंतिम सत्य के ज्ञान की ओर जीवन यात्रा का वर्णन करने हेतु किया है।

लेखक ने वैज्ञानिक मानसिकता के साथ इस पुस्तक का लेखन किया है, और इसके साथ इस पुस्तक में विश्व के विभिन्न धर्मों और व्यक्ति को सिद्ध ज्ञान की ओर ले जाने में व्यक्ति की भूमिका का यथोचित वर्णन किया है। कई

लेखक अन्य धर्मों के प्रति अपने दृष्टिकोण में संकीर्ण विचारधारा रखते हैं, परंतु यह पुस्तक सभी मुख्य धर्मों को इस पहेली में शामिल करती है। यह पुस्तक विभिन्न धार्मिक विश्वास मतों की एक संतुलित रिपोर्ट है, जिसमें में कोई पक्षपात नहीं किया गया है। यद्यपि विभिन्न धर्म मतों के हर पहलु को इसमें शामिल नहीं किया गया है, फिर भी इसमें अधिकतर सुसंगत विषयों को शामिल किया गया है।

लेखक ने इस पुस्तक में विभिन्न व्यक्तिगत घटनाओं और कहानियों का उपयोग किया गया है, ताकि पाठक आसानी से इस पुस्तक की सभी अवध ाारणाओं और विवादों को समझ सकें। अपने कुछ जीवन अनुभवों और उदाहरण के तौर पर ली गई कहानियों की नाट्यपूर्ण प्रस्तुति इस पुस्तक को पूरा करने में पाठक को प्रेरित करती है।

यह विचार प्रवर्तक और लाभदायक पुस्तक परम्पराओं, इतिहास, धर्म, तर्क शास्त्र और बुद्धि, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, विकास क्रम, और सृष्टि रचना के रहस्यों के विषय में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। लेखक जब वह ज्ञान और समझ के बदलने पर दृष्टिकोण में होने वाले बदलाव को स्पष्ट करता है, तब वह एक जन्मजात दार्शनिक के समान लिखता है। इस पुस्तक के कुछ तर्क मसीह, कृष्ण और हिन्दुओं से सम्बंधित हैं और प्रारंभिक वाचन पर वे स्वीकार्य प्रतीत नहीं होते।

अंतिम सत्य को पाठकों तक पहुंचाने के अपने प्रयास में लेखक विशेष तौर पर सफल हुआ है। मुझे आशा है कि यहां प्रस्तुत किए गए विचार पाठकों की ज़रूरतों को पूरा करेंगे, और इस पुस्तक के कुल प्रभाव से मूलभूत प्रश्नों का पुनर्मूल्यांकन आरम्भ होगा, ताकि शोध की प्रक्रिया को जारी रखा जा सके। यह धर्म के समान ही एक शाखा के लिए जीवन, सजीवता और सफलता को आश्वस्त करेगा। यदि मेरे आमुख से सत्य की खोज में लगे पाठकों को इस बहुमूल्य और ज्ञानप्रद कार्य पर विचार करने में सहायता मिलती है, तो मुझे उससे संतोष प्राप्त होगा।

हयूस्टन
जुन 1, 2015

डॉ. मैथ्यू वैरामन,
बी.ए. एल.एल.एम, एम.एस. एम.डिव्ह.
टी.एच.डी.,
अटेर्नी विधि में

अध्याय 1

प्रबुद्ध, ज्ञानी और चतुर

क्या आपने कभी विचार किया कि आपका कोई मित्र या रिश्तेदार आपसे अधिक चतुर, बुद्धिमान या ज्ञानी है? सामान्य तौर पर इन शब्दों का उपयोग आपस में अदल बदल कर किया जाता है। शब्दकोश में (रैन्डम हाऊस वेब्स्टर्स असंक्षिप्त) बुद्धिमान शब्द को "रिश्तों को समझने की योग्यता" के रूप में परिभाषित किया गया है। यह संकल्पना समझने में मुश्किल होगी। आइये, हम देखें कि उसका वास्तविक अर्थ क्या है।

'बुद्धिमान' शब्द हमें बुद्धि के विभिन्न स्तरों की तुलना करने हेतु वैज्ञानिकों द्वारा शोध किए गए बौद्धिक स्तर जाँच (IQ) का स्मरण दिलाता है। एक समय था जब बौद्धिक स्तर या बुद्धि अंक जांच की रूपरेखा तैयार करते समय केवल दो कारकों पर विचार किया जाता था – गणितीय योग्यता और मौखिक योग्यता।

अब वैज्ञानिकों ने अठारह विभिन्न कारकों का शोध किया है और यह सूची बढ़ती ही जा रही है।

एक समय ऐसा माना जाता था कि पियानो बजाने का संबंध बुद्धि अंक (IQ) से नहीं है। उसमें समाहित सभी तत्वों पर कोई भी जांच या परीक्षण विचार नहीं कर सकता। भले ही आपका बौद्धिक स्तर कम माना जाए, परंतु इसका अर्थ हमेशा ही यह नहीं है कि आप ऐसे हैं। जो परीक्षण किया गया, वह आपकी प्रतिभा का आंकलन करने हेतु तैयार नहीं किया गया था।

हम सब में विभिन्न प्रतिभाएं या विशिष्टताएं होती हैं। भले ही और कोई उसकी सराहना न करे, कम से कम आपको तो करनी ही चाहिए। लोगों ने कुछ अति बुद्धिमान लोगों को पागल ठहराया, क्योंकि बहुसंख्य लोग उन बातों की परिकल्पना नहीं कर सके, जिन्हें ये लोग देख सके। वे अपने समय से आगे जी रहे थे। गैलिलियो इसका उत्तम उदाहरण है।

गैलिलियों ने यह अनुमान लगाया कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और पृथ्वी विश्व का केन्द्र नहीं है; यह अवधारणा उन दिनों के सर्वमान्य विश्वास के विपरीत थी। कैथोलिक कलीसिया, जो कि उन दिनों ज्ञान का केन्द्र थी, गैलिलियों की कल्पना को समझ नहीं पाई या देख नहीं पाई। (इस लेखक के मन में कैथेालिक कलीसिया के योगदान के विषय में, जो उसने यूरोपियन सभ्यता के प्रति और मानवता के प्रति किया है, केवल आदर ही है।) गैलिलियो पर मुकद्मा चला और उसे उम्र भर के लिए नज़रबन्दी कर लिया गया। कुछ वर्षों पहले, हॉस्टन क्रॉनिकल ने यह समाचार प्रस्तुत किया कि पोप ने अधिकारिक तौर पर यह कबूल किया है कि जो कुछ कलीसिया ने गैलिलियो के साथ किया, वह गलत था - और वह भी 350 वर्षों के बाद!

जब हम कहते हैं, "बुद्धिमत्ता रिश्तों को समझने की योग्यता है," यह विभिन्न स्तरों पर माना जाता है। उदाहरण के लिये 4+4=8 और 4-4=0 यह जानना या चार और चार के बीच के सम्बंध को जानने का मतलब यह है कि आप उस स्तर पर बुद्धिमान हैं। यदि आप जानते हैं कि किसी की नाक पर मुक्का मारने से मुश्किल खड़ी करना है, या आप किसी क्रिया और उसके

फलस्वरूप होने वाले परिणाम के बीच के सम्बंध को जानते हैं, तो आप उस स्तर पर बुद्धिमान हैं। इस समय परिश्रम करने या पाठशाला में उत्तम अध्ययन करने और, आने वाले कल बेहतर रहनसहन के तरीके या कई वर्ष सड़कों पर इन दोनों बातों के बीच जो सम्बंध है उसका आप पूर्वानुमान लगा सकते हैं, तो आपको उस स्तर पर बुद्धिमान माना जाता है।

इस अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु मैं आपको एक कहानी बताऊंगा। यह कहानी "बुद्धिमान राजेन्द्रन" की है, यह अत्यंत धनवान व्यक्ति था जो कई साल पहले मध्य एशिया के एक गांव में रहता था। उसकी पत्नी का कई वर्षों पहले देहांत हो चुका था, और वह अपने पीछे एक चार वर्ष के बेटे को छोड़ गई थी। राजेन्द्रन के कोई निकट रिश्तेदार नहीं थे। वह एक भला मनुष्य था और समाज में उसे सम्मान प्राप्त था और वह अपने समाज की बड़ी सेवा करता था।

धीरे-धीरे, उसके मन में यह विचार आने लगा कि यदि वह जल्द ही मर गया, तो उसके पास ऐसा कोई विश्वसनीय व्यक्ति नहीं है जिसे वह अपने बेटे को और अपनी विशाल जायदाद को सौंप सके। उस बच्चे की देखभाल करने वाला, उसे शिक्षा देने वाला, और अपनी सम्पत्ति सौंपने वाला उसके पास कोई नहीं था, इसलिए इक्कीस वर्ष की उम्र में उसकी नींद उड़ गई। यदि जल्द ही उसकी मृत्यु हुई, तो उसके पुत्र का भविष्य क्या होगा इस चिंता में वह रात और दिन गुजारने लगा। अंत में एक विचार उसके मन में आया।

वह उस गांव के एक जानेमाने कंजूस व्यक्ति के पास गया, वह एक व्यापारी था जो ब्याज की बड़ी रकम लेकर ज़रूरतमंद लोगों से पैसा ऐंठता था। इसलिए उस गांव में कोई उसे पसंद नहीं करता था। राजेन्द्रन ने अपनी समस्या उसे बताई, और उस व्यापारी में अपने विश्वास को व्यक्त किया और उससे विनती की कि वह उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे की देखभाल करे। उसने व्यापारी से कहा कि जब लड़का इक्कीस वर्ष का हो जाएगा, तब जो कुछ व्यापारी चाहे वह उस लड़के को दे। यह सुनकर व्यापारी अत्यंत खुश हुआ, परंतु उसने अपनी प्रसन्नता को प्रगट नहीं किया। वह उस दिन के विषय में सोचने लगा जब सारी सम्पत्ति केवल उसी की होगी।

इस दृष्टि से कानूनी दस्तावेज तैयार किया गया। जल्द ही राजेन्द्रन की मृत्यु हो गई और वह अपनी जायदाद एवं अपने बेटे को व्यापारी के हाथ छोड़ गया। उसका बेटा बड़ा हो गया और उसने औसत शिक्षा पाई। धीरे-धीरे, गांव में फैली हुई कहानियों को सुनकर, जवान लड़के को यह पता चला कि उसके अभिभावक के पास जो सम्पत्ति है, वह वास्तव में उसके पिता की थी।

जब यह लड़का इक्कीस वर्ष का हुआ, तब व्यापारी ने सम्पत्ति को दो हिस्सों में विभाजित किया। उसने 90 प्रतिशत सम्पत्ति खुद के लिए रखी और 10 प्रतिशत उस जवान को दे दी। जवान ने सोचा कि यह उचित नहीं है और उसे कम से कम 50 प्रतिशत दौलत मिलनी चाहिए थी। दुखी होकर वह गांव छोड़कर चला गया।

सहायता के लिए वह कई वकीलों के पास गया। सबने कानूनी दस्तावेज देखकर सहायता करने से इन्कार कर दिया, क्योंकि उन कागजातों में स्पष्ट रूप से लिखा था कि व्यापारी जो चाहे वह उस लड़के को दे।

अंत में, वह एक चतुर युवा वकील के पास गया। उस वकील ने कानूनी दस्तावेज लेकर उसका सावधानीपूर्वक अध्ययन किया। वह सोचने लगा कि एक पिता अपने बेटे के साथ ऐसा क्यों करेगा। अचानक राजेन्द्रन द्वारा उस कानूनी दस्तावेज में शामिल किया हुआ बुद्धिमानीपूर्ण विचार उस जवान वकील की समझ में आया। उसने मुकद्मा चलाने का निर्णय लिया।

अदालत में वादविवाद को सुनने के लिए एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। जवान वकील ने सफलतापूर्वक यह विवाद पेश किया कि जब राजेन्द्रन ने कहा, "व्यापारी जो चाहता है," तो वास्तव में वह उस 90 प्रतिशत सम्पत्ति का उल्लेख कर रहा था जिसे व्यापारी ने खुद के पास रखा था, क्योंकि व्यापारी को वही

पसंद था। व्यापारी का हिस्सा वास्तव में 10 प्रतिशत था जो व्यापारी नहीं चाहता था और उसने उसे उस लड़के को दे दिया था। न्यायाधीश ने तुरंत इस विवाद के लिए सहमति जताई और संपूर्ण अदालत इस मुकद्मे से खुश हो गई। हर व्यक्ति ने मृतक राजेन्द्रन की बुद्धिमानी की प्रशंसा की।

राजेन्द्रन अपने कार्य और उसके परिणाम के बीच के सम्बंध को समझ गया था। वह भविष्य के कई वर्षों को पहले से देख रहा था। दूसरे शब्दों में, बुद्धिमानी हमारे शब्दों, कार्यों, या विश्वास के भविष्य के परिणामों का पूर्वानुमान लगाने की योग्यता है।

क्या आपने दो भाइयों की कहानी सुनी जो किसान थे? एक ने टमाटर बोने का फैसला किया। उसे जल्दी फल लगे, और उस घर में भोज और उत्सव मनाया गया। दूसरे भाई ने नारियल के पेड़ लगाने का फैसला किया। प्रारम्भ में से उसे कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ा क्योंकि नारियल के पेड़ में फल लगने में कुछ वर्ष लग जाते हैं। जब नारियल के पेड़ को फल लगने लगे, तो वे पीढ़ियों तक चलते रहे। जब वह सोता था, तब भी पेड़ फल देता था, मौसम में और बेमौसम भी। वह पेड़ उसके लिए तथा आने वाली कई पीढ़ियों के लिए सुख का श्रोत था। उसका भाई अब भी अपनी साग सब्जियों के लिए परिश्रम कर रहा था, जिस पर आमदनी के लिए निर्भर नहीं रहा जा सकता था। उसे आराम नहीं मिल रहा था।

हम भले ही बुद्धिमान हैं, फिर भी कभी कभी हम मूर्खतापूर्ण गलतियां करते हैं। यदि बुद्धिमानी भविष्य में देखने की योग्यता है, तो हम भविष्य को कितनी दूर तक देख सकते हैं? क्या हम कल में, एक वर्ष बाद, पांच वर्षों के बाद, दस वर्षों के बाद, पचास सालों बाद, सौ वर्षों बाद, आज से दस पीढ़ियों बाद, या इस जीवन से परे - आपके अनंतकाल में देख सकते हैं?

यदि आप आज मर जाएंगे, तो क्या होगा? क्या यह जीवन उसका अन्त है? आप विश्वास करें या न करें, केवल एक ही सत्य है। यदि आप इस मरणहार जीवन से परे देख सकते हैं, तो आप बहुसंख्य लोगों से अधिक बुद्धिमान हैं। ये भेद तथाकथित बुद्धिमानों और विद्वानों से छिपा हुआ है और

बच्चों और बालकों पर प्रगट किया गया है। यदि आपके पास सर्वशक्तिमान परमेश्वर के मार्गों को खोजने का समय है, तो वह आप पर सत्य प्रगट करेगा।

जो कुछ परमेश्वर द्वारा हम पर प्रगट किया गया है, वहीं तक हमारा परमेश्वर संबंधी ज्ञान सीमित है। यह प्रकाश केवल उन्हीं लोगों के पास आता है, जो नम्र भाव से परमेश्वर की खोज में लगे रहते हैं। क्या आप इतने बुद्धिमान हैं कि विनम्र स्वभाव को अपनाएं और बिना किसी पूर्वाग्रह के श्रेष्ठ शक्ति स्रोत की खोज करें। यदि आप अपनी आंखों को खोलकर देखें, तो उसकी महिमा के प्रगटीकरण कहीं भी और हर कहीं उपस्थित हैं।